BANS 184: सार्वजनिक स्वास्थ्य और महामारी विज्ञान

(अनुशिक्षक चिंहित सत्रीय–कार्य)

कोर्स कोड: BANS 184

सत्रीय–कार्य कोड: BANS 184/ASST/TMA/ जुलाई 2026–जनवरी 2027

कुल अंक: 100

सत्रीय–कार्य में दो अनुभाग हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सत्रीय कार्य–I

निम्नलिखित में प्रत्येक के उत्तर 500 शब्दों में दें। **20x2= 40**

(क) लोक स्वास्थ्य क्या है? भारत में लोक स्वास्थ्य का विवरण प्रस्तुत कीजिए।

(ख) भारत में उपलब्ध विभिन्न स्वास्थ्य–सेवा प्रणालियों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

सत्रीय कार्य–II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 250 शब्दों में दीजिए। **10X3=30**

(क) वैश्वीकरण तथा उसके स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का विवरण प्रस्तुत कीजिए।

(ख) भारत के स्वास्थ्य क्षेत्र में गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

(ग) महामारी विज्ञान क्या है? यादृच्छिकीकृत अध्ययनों (Randomised Studies) की विवेचना कीजिए।

निम्नलिखित में प्रत्येक का उत्तर 150 शब्दों में दीजिए। **5X6=30**

(क) लैंगिकता एवं स्वास्थ्य

(ख) टीकाकरण

(ग) यादृच्छिक प्रतिचयन (Random Sampling)

(घ) दीर्घकालिक रोग

(ङ) काई–वर्ग (χ^2) परीक्षण (Chi square Test)

(च) एसपीएसएस

(क) लोक स्वास्थ्य क्या है? भारत में लोक स्वास्थ्य का विवरण प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

लोक स्वास्थ्य अथवा सार्वजनिक स्वास्थ्य वह संगठित सामाजिक प्रयास है जिसके द्वारा किसी समुदाय या पूरी जनसंख्या में रोगों की रोकथाम, जीवन की रक्षा, स्वास्थ्य संवर्धन और स्वास्थ्य संबंधी असमानताओं को कम करने का कार्य किया जाता है। व्यक्तिगत चिकित्सा मुख्यतः बीमार व्यक्ति के निदान और उपचार पर ध्यान देती है, जबकि लोक स्वास्थ्य पानी, स्वच्छता, पोषण, आवास, पर्यावरण, टीकाकरण और स्वास्थ्य सेवाओं जैसे उन कारणों पर भी कार्य करता है जो अनेक लोगों के स्वास्थ्य को एक साथ प्रभावित करते हैं। इसका उद्देश्य केवल रोग न होना नहीं, बल्कि लोगों को शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से स्वस्थ जीवन जीने के अवसर उपलब्ध कराना है।

लोक स्वास्थ्य की प्रकृति एवं उद्देश्य

लोक स्वास्थ्य का आधार यह विचार है कि लोगों का स्वास्थ्य उनकी व्यक्तिगत आदतों के साथ-साथ आय, शिक्षा, लिंग, व्यवसाय, पर्यावरण और सरकारी नीतियों से निर्धारित होता है। इसीलिए स्वास्थ्य का संरक्षण केवल चिकित्सकों का कार्य नहीं है; इसमें स्थानीय निकायों, विद्यालयों, जलापूर्ति विभाग, महिला समूहों और नागरिकों की भी भूमिका होती है। इसके प्रमुख उद्देश्य संक्रामक रोगों को नियंत्रित करना, मातृ एवं शिशु मृत्यु को कम करना, पौष्टिक भोजन और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना, दुर्घटनाओं तथा गैर-संचारी रोगों की रोकथाम करना और सभी समुदायों तक गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ पहुँचाना हैं।

भारत में लोक स्वास्थ्य का विकास

भारतीय समाज में स्वच्छता, आहार और रोग-प्रतिरोध के विचार प्राचीन काल से मिलते हैं। औपनिवेशिक काल में हैजा, प्लेग तथा अन्य महामारियों ने सफाई, जलनिकासी और रोग-निगरानी की आवश्यकता स्पष्ट की। स्वतंत्रता के बाद भारत ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, जिला अस्पतालों और राष्ट्रीय रोग-नियंत्रण कार्यक्रमों का विस्तार किया। स्वास्थ्य नीति में धीरे-धीरे केवल उपचार से हटकर रोकथाम, सामुदायिक सहभागिता तथा